42. सर्वशिक्षा अभियान

संकेत बिंदु–

- शिक्षा का महत्त्व
- साक्षरता की उपयोगिता
- निरक्षरता के कारण
- इस दिशा में आपका योगदान

शिक्षा के बिना कोई भी बनता नहीं सत्पात्र है।
इसे पाने के लिए कुछ भी प्रयास करना मात्र है।।
सबसे पहला कर्तव्य है, शिक्षा बढ़ाना देश में।
शिक्षा के बिना ही हैं हम सभी क्लेश में।

मनुष्य सुख-शांति के लिए जन्म से ही प्रयास करता रहता है। शिक्षा के द्वारा उसे मानसिक शक्ति प्राप्त होती रही है। समाज का शिष्ट एवं सभ्य नागरिक बनाने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

व्यक्ति की सच्ची स्वतंत्रता निरक्षरता में नहीं, साक्षरता में है। इसलिए हमारे देश के नेताओं ने देश की स्वतंत्रता से भी काफी पहले राष्ट्रीय विकास के माध्यम के रूप में शिक्षा के महत्त्व को अनुभव कर लिया था। वे यह जान चुके थे कि नैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए शिक्षा आवश्यक है तभी गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की बात उठाई थी।

साक्षरता प्रतीक है–स्वतंत्रता एवं विकास की। शिक्षा ही गुलामी की जंजीरों तथा शोषण से हमारी रक्षा करती है। जब कोई व्यक्ति सूदखोर ज़मींदार को पढ़ने व समझने लगता है, जब एक खाली व कोरे कागज पर अँगूठा लगाने से इंकार कर देता है- तब होता है एक विस्फोट; जिसकी गूँज व लौ दूर–दूर तक महसूस की जा सकती है। फिर जन्म होता है एक नए मानव का, एक साक्षर मानव का, एक स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर मानव का। इसके साथ ही समाज लेता है– एक नई अँगड़ाई, एक नई दिशा, एक नया मोड़।

प्रजातंत्र की सफलता, पूर्णतया देश के नागरिकों पर निर्भर है और ऐसा तभी संभव है जब व्यक्ति उचित व अनुचित में भेद करना सीख जाए। ऐसा मात्र शिक्षा द्वारा ही संभव है। शिक्षा ही प्रजातंत्र को जीवंत बनाती है। अत: शिक्षा ही प्रजातंत्र में प्राण फूँकती है, इसको सार्थक बनाती है तथा सही अर्थों में शिक्षा ही प्रजातंत्र की आत्मा है।

शिक्षा के द्वारा ही शारीरिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास संभव है। इसी के द्वारा मन, मस्तिष्क की शक्तियों को एकजुट किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही समय और स्थान के अनुसार घटनाओं, विचारों एवं अपने दृष्टिकोण को व्यक्ति अधिक सहजता से प्रकट करने में समर्थ हो जाता है। शिक्षा जानकारी को संप्रेषित करने के साथ–साथ संकलित करने का भी माध्यम है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह मनुष्य, मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है जो निरक्षर है। वह पशु–तुल्य प्रवृत्तियों को अपनाता है। मनुष्य को पृथ्वी का स्वामी माना गया है परंतु यदि वह निरक्षर होगा तो वह स्वामी की उपाधि के लिए उपयुक्त भूमिका नहीं निभा पाएगा। शिक्षित व्यक्ति ही अपने साथ–साथ दूसरों को भी प्रगति प्रदान करता है।

भारत सरकार ने स्वतंत्रता पाने के पश्चात् बहुत–से विद्यालय खोले। प्रौढ़–शिक्षा, सह–शिक्षा एवं अनौपचारिक शिक्षा केंद्र भी खोले गए। आज शिक्षा का स्तर पहले से अधिक बढ़ गया है। लेकिन अभी भी स्थिति उतनी दृढ़ नहीं है, जितनी कि होनी चाहिए। यह स्थिति बालिकाओं के मामले में तो और भी बदतर है। आज का समाज नारी–शिक्षा में रुकावट है इसलिए बालिकाओं का विद्यालय छोड़ने का प्रतिशत अब भी अपेक्षतया अधिक है। अत: भारत में जब भी कोई नीति बने, उसमें इस प्रतिशत पर विशेष ध्यान देना होगा।

Scanned with CamScanner

7. स्वदेश प्रेम

संकेत बिंदु –
- देश प्रेम का अर्थ
- देश प्रेम – एक उच्च भावना
- देश का महत्त्व
- राष्ट्रीय एकता के लिए देश प्रेम आवश्यक

जिस देश में हम जन्मे हैं, जिसकी धरती का हमने अन्न, जल लिया है, जिसकी रज में हम खेल-कूदकर बड़े हुए हैं, उसके प्रति हमारा स्वाभाविक लगाव हो जाता है। वही स्वाभाविक लगाव 'देश प्रेम' कहलाता है। देश प्रेम का अर्थ हैं- देश के कण-कण से प्रेम करना। कुछ लोग देश के लिए मरने वालों को ही देश-प्रेमी मानते हैं। यह धारणा गलत है। असली देश-प्रेमी वही है जो स्वदेश हित के लिए जीता है।

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादीप गरीयसी''

अर्थात माता और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है। बिना स्वदेश के जीवन धारण करना ही कठिन है। इसीलिए देश को माँ की संज्ञा दी जाती है। जिस प्रकार हमारे अपनी माँ के प्रति कुछ कर्तव्य और स्नेह-संबंध होते है, वैसे ही अपने देश के प्रति भी कुछ दायित्व होते हैं। देश -भावना से शून्य व्यक्ति तो समाज पर बोझ होता है। मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार-

है भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं, वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

देश प्रेम की भावना बड़ी उच्च भावना है। उसी भावना से प्रेरित होकर देशभक्त अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। क्या नहीं था महाराणा प्रताप के पास? धन, धरती, वैभव, सिंहासन और यदि वे मानसिंह की भाँति अकबर से समझौता कर लेते तो और भी क्या नहीं मिलता? लेकिन फिर यह कौन-सी तड़प थी कि हल्दी घाटी के युद्ध-तीर्थ पर उन्होनें सब बलिदेवी पर चढ़ा दिया। वन-वन भटके, गुफ़ाओं में रहे, घास की रोटियाँ खाईं। वह थी देश-प्रेम की तीव्र अभिलाषा। स्वतंत्रता संग्राम के समय कितने ही देश भक्तों ने जेल की यातनाएँ भोगीं, हँसते-हँसते लाठियाँ खाईं, दिन का चैन और रात की नींद गँवाई और सहर्ष फाँसी के तख्तों को चूम लिया। यह देश प्रेम ही तो था कि लाला लाजपतराय ने छाती-चौड़ी कर क्रूर की लाठियाँ खाईं, सुभाष बाबू ने विदेश में जाकर आज़ाद हिंद-फौज का गठन किया तथा नहेरू ने ऐश्वर्य और वैभव के जीवन को ठुकरा दिया संसार के अन्य देशों के इतिहास भी देश-प्रेम की गाथाओं से रंगे पड़े हैं।

देश प्रेम की भावना राष्ट्रीय एकता के लिए परम आवश्यक है। आज देश, जाति, भाषा, वर्ण, प्रांत, दल आदि के नाम पर बँटा हुआ है। ऐसे समय में देश भक्ति की भावना इस टूटन और बिखराव को दूर करके सारे देश को एकजुट कर सकती है।

Scanned with CamScanner